Search

International Journal of Humanities and Social Science Research

ISSN: 2455-2070

IMPACT FACTOR RJIF 5.22

FREQUENCY

Online Journal

Indexed Journal

Refereed Journal

Peer Reviewed Journal

doi.org/10.22271/social

Int. J. Humanit. Soc. Sci. Res.

ARTICLES	VIEWS	DOWNLOADS
797	644703	353621

ISSN: 2455-2070 (Online)
Peer Review Process: Blind Peer Review Process
Frequency of Publication: Bimonthly [6 issues per year]
Languages: English & Hindi
Accessibility: Open Access
Plagiarism Checker: Plagiarism X
DOI : doi.org/10.22271/social

International Journal of Humanities and Social Science Research (IJHSSR) is an open access, peer-reviewed and refereed journal provide intellectual platform for the international scholars. IJHSSR aims to promote studies in humanities and social science and become the leading journal in humanities and social science in the world.

social.manuscript@gmail.c

English, Hindi

JOIN EDITORIAL BOARD

Archives

Current Issue

Home

Editorial Board

Instructions

Indexing

Contact Us

INDEXING

RJIFACTOR · ISSN · CiteFactor · SSRN · Crossref · Academia.edu

Publication Ethics

Instructions to Reviewer

Publication Policy

Publication Frequency

Publication Year

Journals List

Click Here

Research Journals

International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
www.socialresearchjournals.com
Volume 3; Issue 2; February 2017; Page No. 96-98

मध्य प्रदेश में गोंड जनजाति की सामाजिक चुनौतियाँ

राम बाबू

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

प्रस्तावना

"गोंड मध्य भारत का एक विशाल जनजातीय समुदाय है| यह समुदाय अनेक उपजातियों के समूहों से मिलकर बना है| नृजातीय साहित्य में गोंड अपने रंगारंग युवागृहों के कारण बहुचर्चित रहे हैं| गोंड समुदाय मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़, उड़ीसा, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल, और गुजरात में निवास करते है| परन्तु इनका मूल निवास स्थान छत्तीसगढ़ का बस्तर क्षेत्र माना जाता है| गोंड समुदाय की कुल जनसंख्या पचास लाख से अधिक है जो केवल मध्य प्रदेश व छनीसगढ़ में ही इनकी संख्या तीस लाख से भी अधिक है जो अपनी पचास से अधिक उपजातियो में बंटे हुये प्रदेशों के मध्यवर्ती पठारी भाग – मंडला, सिवनी, छिंदवाडा, और बैतूल तथा बस्तर क्षेत्र में फैले हुये है| आज भी मंडला जिले की लगभग आधी जनसँख्या गोंड है| इस समुदाय के लोगो की एक विशेषता यह है कि ये लोग अपना परिचय मूल गोंड जाति के रूप में न देकर अपनी उपजाति के नाम से या "कोतार" कह देते है| "कोय" "कोयतोर" या "कौतोर" शब्द का अर्थ है पर्वतीय मनुष्य या गिरिवासी| इनकी परम्परागत पड़ोसी जनजातीय है बैगा, खोंड, अगडिया, भूमिज तथा गदबा आदि| 'अतः इस समुदाय के लोगो की शारीरिक बनावट के आधार पर इनके' त्वचा का रंग कथई या कालापन लिये हुए होता है| इनके बाल मोटे, काले तथा घुमावदार, चेहरा गोल, आंखे काली, ओठ मोटे और नाक फूली हुई होती हैं|[1]

'गोंड एक बहुत ही प्रभावशाली जनजाति है और गोंड प्रकृति प्रेमी होतें है क्योकि प्रकृति से इनका बहुत लगाव होता है| "गोंड शब्द तेलगू भाषा के गोंडा या गोंड से आया है जिसका अर्थ होता है पर्वत अर्थात पर्वत पर रहने वाले गोंड कहलाये और गोंड लोग जिस बोली या भाषा का प्रयोग अपने दैनिक जीवन में करते है वह गोंडी कहलाती है| गोंडी शब्द द्रविण परिवार के मध्यवर्ग की भाषा है| बालाघाट, बैतूल, पूर्वी निमाड़, होशंगाबाद, छिंदवाडा, सिवनी, के गोंड लगभग शुद्ध गोंडी बोलते है|"[2]

'हजारों वर्षो से जनजातियाँ जंगलों और पहाड़ी इलाकों में रह रही है| खुले मैदानों के निवासियों और सभ्यता के केन्द्रों से उनका संपर्क आकस्मिक से अधिक नहीं रहा| मैदानी इलाकों के साहूकारों और व्यापारियों के भीषण आक्रमण ने जनजाति समाज को तबाही के गर्त में ढकेल दिया| ऐसे अनेक उदाहरण मिलते है की मैदानों से आयें इन धूर्त, चालाक और पेशेवर लोगो के संपर्क में आने के बीस से तीस वर्षो के भीतर जनजातीय लोग अपनी आर्थिक आत्म निर्भरता और अधिकांश भूमि खो बैठे जो हमेशा से जल, जंगल, जमीन, पर अधिकार रहा है । इन गरीब और सभी तरह से दुर्बल जनजातियों की व्यथा कथा लगभग सौ वर्षो के समय समय पर प्रतिध्वनि होती रही है| देश की स्वतंत्रता के बाद भी उन्हें सरकार ने और उनके अपेक्षाकृत सभ्य देशवासियों ने एक समस्या की सज्ञा ही दी उससे ज्यादा कुछ नहीं|'[3]

"गोंड जनजाति सबसे अधिक प्रभावशाली जनजाति है| गोंड प्रकृति की कोख में किसी पहाड़ी पर या नदी किनारे रहना पसंद करते है| गोंडो के अधिकांश गाँव सड़क से दूर जंगलों में बसे होते है गोंड प्रकृति प्रेमी होते है| गोंडो का सर्वाधिक प्रिय पेय शराब है और गोंडो के जीवन में शिकार का बहुत महत्व है| गोंडो की जीविका का सबसे बड़ा साधन शिकार है|"[4]

'भारतीय सविधान की पांचवी अनुसूची में "अनुसूचित जनजातियों" के रूप में प्रावधान किया गया है। अतः अक्सर इन्हें अनुसूचित जातियों के साथ एक ही श्रेणी "अनुसूचित जातियों और जनजातियों" मे रखा जाता है जो कुछ सकारात्मक कार्रवाई के उपायों के लिए पात्र है। आदिवासियों के अपने जनजातीय संप्रदाय, रीतिरिवाज, परम्पराये और संस्कृति हैं, जो इस्लाम या वैदिक हिंदू धर्म से अलग हैं पर तांत्रिक शैव के अधिक करीब हैं। 19 वीं सदी के दौरान ईसाई मिशनरियों द्वारा इनकी एक बड़ी संख्या का परिवर्तन कराकर ईसाई बना दिया गया। माना जाता है कि हिंदुओं के देव भगवान शिव भी मूल रूप से एक आदिवासी देवता थे लेकिन आर्यो ने भी उन्हें देवता के रूप मे स्वीकार कर लिया। आदिवासियों का जिक्र रामायण में भी मिलता है, आजादी के 78 साल बाद भी भारत के आदिवासी उपेक्षित, शोषित और पीड़ित नजर आते हैं। राजनीतिक पार्टियाँ और नेता आदिवासियों के उत्थान की बात करते हैं, लेकिन उस पर अमल नहीं करते। देश में अभी भी आदिवासी दोयम दर्जे के नागरिक जैसा जीवन-यापन कर रहे हैं। नक्सलवाद हो या अलगाववाद, पहले शिकार आदिवासी ही होते हैं। उड़ीसा के कंधमाल में धर्मांधता के शिकार आदिवासी हुए और छत्तीसगढ़, उड़ीसा तथा झारखंड में आदिवासी नक्सलवाद तथा माओवाद की त्रासदी झेल रहे हैं। पहली बार 'यूपीए-सरकार के शासन में आदिवासियों के अपने क्षेत्र और संसाधनों पर अधिकार की बात को कानूनी तौर पर मान्यता मिली। आदिवासी संरक्षण के लिए नया कानून बना जिसके द्वारा ब्रिटिश जमाने के समस्त नकारात्मक प्रावधानों की विदाई तो हुई लेकिन स्थिति में कोई बड़ा बदलाव नहीं आया'।[5]

'वर्तमान समय में जनजातीयों की सामाजिक चुनौतियों को हम अनदेखी नहीं कर सकते है| वैसे तो जनजातियों के समक्ष अनेक प्रकार की सामाजिक चुनौतियाँ आज विकराल रूप से मुंह बाएं खडी हुई है'| 'आज जिस गति से जल, जमीन, जंगलों पर भू माफियाओ द्वारा उनके खनिज सम्पदा पर जिस प्रकार से बंदिशे बढ़ रही है, उससे तो लगता है कि आने वाले दिनो में उनके समक्ष अनेक प्रकार की चुनौतियाँ सामने खड़ी हो सकती हैं|'[6] इस प्रकार मध्य प्रदेश में गोंड जनजातियों की निम्नलिखित सामाजिक चुनौतिया-

गरीबी- 'गरीबी तो समस्त मानव के लिए एक अभिशाप की तरह ही होती है| गरीबी उन्मूलन की दिशा में भी सर्कार ने पंचवर्षीय योजना शुरु की और इस क्षेत्र में काफी परिवर्तन भी देखने को मिला लेकिन उतना परिवर्तन नहीं हो सका जितना कि होना चाहिए था|' "योजना आयोग ने ग़रीबी के प्रतिशत का अनुमान 1983-84 में 37.4 प्रतिशत और 1987-88 में 29.9 प्रतिशत लगाया| यह प्रतिशत कुल आबादी का है| 1983-84 के काल में ग्रामीण इलाको में ही रहते है| जनजातीय समुदाय धीरे – धीरे एक ऐसी प्रक्रिया का शिकार होता गया जिसमे एक ओर तो उनके साधनों के आधार और उत्पादन रास्ट्रीय एवम् अंतरास्ट्रीय अर्थव्यवस्था से अस्त व्यस्त हुए और दूसरी ओर उनके परम्परागत सामुदायिक अधिकारो (जल, जंगल, जमीन,)और आर्थिक मूलाधारों का अपहरण राज्य सरकारों और व्यापारी हितो द्वारा किया गया| जंगलों से वन उत्पाद सम्बंधित उनके परम्परागत अधिकार पूरी तरह से छीन लिए गये| जनजातियों की अच्छी उपजाऊ जमीने उन लोगो के हाथो में चली गयी जो उनके समाज के नहीं है| जनजाति के लोग दिन प्रति दिन गरीब होते जा रहे है| यही